हिंदी (आधार) (कोड सं.– 302) कक्षा 11वीं– (2021-22)

प्रस्तावना:

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी समझते हुए पढ़ने व सुनने के साथ-साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आने के बाद इन सभी दक्षताओं को सामान्य से ऊपर उस स्तर तक ले जाने की आवश्यकता होती है, जहाँ भाषा का प्रयोग भिन्न-भिन्न व्यवहार-क्षेत्रों की मांगों के अनुरूप किया जा सके। आधार पाठ्यक्रम, साहित्यिक बोध के साथ-साथ भाषाई दक्षता के विकास को ज्यादा महत्त्व देता है। यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगा, जो आगे विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ेंगे या विज्ञान/सामाजिक विज्ञान के किसी विषय को हिंदी माध्यम से पढ़ना चाहेंगे। यह उनके लिए भी उपयोगी साबित होगा, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद किसी तरह के रोज़गार में लग जाएंगे। वहाँ कामकाजी हिंदी का आधारभूत अध्ययन काम आएगा। जिन विद्यार्थियों की रुचि जनसंचार माध्यमों में होगी, उनके लिए यह पाठ्यक्रम एक आरंभिक पृष्ठभूमि निर्मित करेगा। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम सामान्य रूप से तरह-तरह के साहित्य के साथ विद्यार्थियों के संबंध को सहज बनाएगा। विद्यार्थी भाषिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्म एवं जटिल रूपों से परिचित हो सकेंगे। वे यथार्थ को अपने विचारों में व्यवस्थित करने के साधन के तौर पर भाषा का अधिक सार्थक उपयोग कर पाएँगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक् दृष्टि का विकास हो सकेगा।

उद्देश्य:

- संप्रेषण के माध्यम और विधाओं के लिए उपयुक्त भाषा प्रयोग की इतनी क्षमता उनमें आ चुकी होगी कि वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- भाषा के अंदर सक्रिय सत्ता संबंध की समझ।
- सृजनात्मक साहित्य की समझ और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- विद्यार्थियों के भीतर सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण रवैये का विकास।
- पठन-सामग्री को भिन्न-भिन्न कोणों से अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास करवाना तथा आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
- विद्यार्थी में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की क्षमता तथा साहित्य को श्रेष्ठ बनाने वाले तत्वों की संवेदना का विकास।
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति और उसकी क्षमताओं का बोध।
- कामकाजी हिंदी के उपयोग के कौशल का विकास।
- जनसंचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की आवश्यकता के अनुरूप मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास।
- विद्यार्थी में किसी भी अपरिचित विषय से संबंधित प्रासंगिक जानकारी के स्रोतों का अनुसंधान और व्यवस्थित ढंग से उनकी मौखिक और लिखित प्रस्तुति की क्षमता का विकास।

शिक्षण-युक्तियाँ:

- कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यह है कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चूँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंठस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है, इसलिए विषय को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकसित करना ही शिक्षक का काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षिका के बीच निर्बाध संवाद जरूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतनी ही ज़्यादा स्पष्टता उनमें आ पाएगी।

- भाषा की कक्षा से समाज में मौजूद विभिन्न प्रकार के द्वंद्वों पर बातचीत का मंच बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए संविधान में किसी शब्द विशेष के प्रयोग पर निषेध को चर्चा का विषय बनाया जा सकता है। यह समझ जरूरी है कि विद्यार्थियों को सिर्फ सकारात्मक पाठ देने से काम नहीं चलेगा बल्कि उन्हें समझाकर भाषिक यथार्थ का सीधे सामना करवाने वाले पाठों से परिचय होना जरूरी है।
- शंकाओं और उलझनों को रखने के अलावा भी कक्षा में विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक बोलने के लिए प्रेरित किया जाना जरूरी है। उन्हें यह अहसास कराया जाना चाहिए कि वे पठित सामग्री पर राय देने का अधिकार और ज्ञान रखते हैं। उनकी राय को प्राथमिकता देने और उसे बेहतर तरीके से पुनः प्रस्तुत करने की अध्यापकीय शैली यहाँ बहुत उपयोगी होगी।
- विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी जरूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समूह न मानकर अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में अहमियत दी जाए। शिक्षकों को अक्सर एक कुशल संयोजक की भूमिका में स्वयं देखना होगा, जो किसी भी इच्छुक व्यक्ति को संवाद का भागीदार बनने से वंचित नहीं रखते, उसके कच्चे-पक्के वक्तव्य को मानक भाषा-शैली में ढाल कर उसे एक आभा दे देते हैं और मौन को अभिव्यंजना मान बैठे लोगों को मुखर होने पर बाध्य कर देते हैं।
- अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन तथा उसकी मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास शिक्षकों के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लिए शिक्षकों को एक निश्चित अंतराल पर नए-नए विषय प्रस्तावित कर उनपर लिखने तथा संभाषण करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा। यह अभ्यास ऐसा है, जिसमें विषयों की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। विषय की असीम संभावना के बीच शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उसके विद्यार्थी किसी निबंध-संकलन या कुंजी से तैयारशुदा सामग्री को उतार भर न ले। तैयार शुदा सामग्री के लोभ से, बाध्यतावश ही सही मुक्ति पाकर विद्यार्थी नये तरीके से सोचने और उसे शब्दबद्ध करने के लिए तैयार होंगे। मौखिक अभिव्यक्ति पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि भविष्य में साक्षात्कार, संगोष्ठी जैसे मौकों पर यही योग्यता विद्यार्थी के काम आती है। इसके अभ्यास के सिलसिले में शिक्षकों को उचित हावभाव, मानक उच्चारण, पॉज, बलाघात, हाजिरजवाबी इत्यादि पर खास बल देना होगा।
- काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की लयबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-वीडियो कैसेट तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- एन सी ई आर टी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विभिन्न संगठनों तथा स्वतंत्र निर्माताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए कार्यक्रम/ई-सामग्री,वृत्तचित्रों और सिनेमा को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है। विद्यार्थियों को स्तरीय परीक्षा करने को भी कहा जा सकता है।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनका कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सके।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने के लिए प्रेरित होंगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।
- कक्षा-अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार, ट्यूटोरियल कार्य, समस्या-समाधान कार्य, समूहचर्चा, परियोजना कार्य, स्वाध्याय आदि पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह जरूरी है कि समय-समय पर इन माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी विद्यालय में बुलाया जाए तथा उनकी देख-रेख में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएं।
- भिन्न क्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा उन्हें किसी भी प्रकार से अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।

- कक्षा में शिक्षक को हर प्रकार की विविधताओं(लिंग जाति, धर्म, वर्ग आदि) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।

<u>आंतरिक मूल्यांकन हेतु</u> –

श्रवण तथा वाचन परीक्षा हेतु दिशा-निर्देश

- **श्रवण (सुनना) (5अंक)**: वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप करना, वाद-विवाद, भाषण, कवितापाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझना।
- **वाचन (बोलना) (5अंक)**: भाषण, सस्वर कविता-पाठ, वार्तालाप और उसकी औपचारिकता, कार्यक्रम-प्रस्तुति, कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना, परिचय देना, भावानुकूल संवाद-वाचन।

टिप्पणी: *वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय ही होगा। निर्धारित 10 अंकों में से 5 श्रवण (सुनना) कौशल के मूल्यांकन के लिए और 5 वाचन (बोलना) कौशल के मूल्यांकन के लिए होंगे।*

वाचन (बोलना) एवं श्रवण (सुनना) कौशल का मूल्यांकन:

- परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 250 शब्दों का होना चाहिए।

या

- परीक्षक 2-3 मिनट का श्रव्य अंश (ऑडियो क्लिप) सुनवाएगा। अंश रोचक होना चाहिए। कथ्य/ घटना पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। वाचक का उच्चारण शुद्ध, स्पष्ट एवं विराम चिह्नों के उचित प्रयोग सहित होना चाहिए।
- परीक्षार्थी ध्यानपूर्वक परीक्षक/ऑडियो क्लिप को सुनने के पश्चात परीक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का अपनी समझ से मौखिक उत्तर देंगे। (1x5 =5)
- किसी निर्धारित विषय पर बोलना: जिससे विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभवों का प्रत्यास्मरण कर सकें।
- कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना।
- परिचय देना। (स्व/ परिवार/ वातावरण/ वस्तु/ व्यक्ति/ पर्यावरण/ कवि /लेखक आदि)
- परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव-जगत के हों।
- जब परीक्षार्थी बोलना आरंभ करें तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

(इस बात का निश्चय करना कि क्या विद्यार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलिखित योग्यताएँ हैं)

क्र.	श्रवण (सुनना)		वाचन (बोलना)
1	परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है।	1	केवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
2	छोटे सुसंबद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	2	परिचित संदर्भों में केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।

3	परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है।	3	अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
4	दीर्घ कथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने के ढंग और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है।	4	अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा-प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है।
5	जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करने की क्षमता है।	5	उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है।

परियोजना कार्य - कुल अंक 10

- विषय वस्तु - 5 अंक
- भाषा एवं प्रस्तुति - 3 अंक
- शोध एवं मौलिकता - 2 अंक

  - हिन्दी भाषा और साहित्य से जुड़े विविध विषयों/ विधाओं / साहित्यकारों / समकालीन लेखन / साहित्यिक वादों / भाषा के तकनीकी पक्ष / प्रभाव / अनुप्रयोग / साहित्य के सामाजिक संदर्भों एवं जीवन मूल्य संबंधी प्रभावों आदि पर परियोजना कार्य दिए जाने चाहिए।
  - सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थी को विषय चुनने का अवसर मिले ताकि उसे शोध, तैयारी और लेखन के लिए पर्याप्त समय मिल सके ।

  - **वाचन -श्रवण कौशल एवं परियोजना कार्य का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आंतरिक परीक्षक द्वारा ही किया जाएगा।**

परियोजना-कार्य

'परियोजना' शब्द योजना में 'परि' उपसर्ग लगने से बना है। 'परि' का अर्थ है 'पूर्णता' अर्थात ऐसी योजना जो अपने आप में पूर्ण हो परियोजना कहलाती है। किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जो योजना बनाई और कार्यान्वित की जाती है, उसे परियोजना कहते हैं। यह किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई एक पूर्ण विचार योजना होती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा, नई शिक्षा नीति 2020 तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा समय-समय पर अनुभवात्मक अधिगम, आनंदपूर्ण अधिगम की बात की कही गई है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए हिंदी का अध्ययन एक सृजनात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और विभिन्न प्रयुक्तियों की भाषा के रूप में करने और करवाने के लिए परियोजना कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण व लाभदायक सिद्ध होता है।

परियोजना का महत्व

- व्यक्तिगत स्तर पर खोज , कार्रवाई और ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षा के दौरान अर्जित ज्ञान और कौशल, विचारों आदि पर चिंतन का उपयोग ।
- सैद्धांतिक निर्माणों और तर्कों का उपयोग करके वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों का विश्लेषण और मूल्यांकन
- एक स्वतंत्र और विस्तारित कार्य का निर्माण करने के लिए महत्वपूर्ण और रचनात्मक सोच कौशल और क्षमताओं के अनुप्रयोग का प्रदर्शन
- उन विषयों पर कार्य करने का अवसर जिनमें शिक्षार्थियों की रुचि है
- नए ज्ञान की ओर अग्रसर

- खोजी प्रवृत्ति में वृद्धि
- भाषा ज्ञान समृद्ध एवं व्यावहारिक
- समस्या समाधान की क्षमता का विकास

परियोजना कार्य निर्धारित करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- परियोजना कार्य शिक्षार्थियों में योग्यता आधारित क्षमता को ध्यान में रखकर दिए जाएँ जिससे वे विषय के साथ जुड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को समझ सकें। वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता पर भी ध्यान दिया जाए।
- सत्र के प्रारम्भ में ही विद्यार्थियों को विषय चुनने का अवसर मिले ताकि उसे शोध, तैयारी और लेखन के लिए पर्याप्त समय मिल सके।
- अध्यापिका/अध्यापक द्वारा कक्षा में परियोजना-कार्य को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की जाए जिससे विद्यार्थी उसके अर्थ, महत्व व प्रक्रिया को भली-भाँति समझने में सक्षम हो सकें ।
- हिंदी भाषा और साहित्य से जुड़े। विविध विषयों/ विधाओं/ साहित्यकारों/ समकालीन लेखन/ भाषा के तकनीकी पक्ष/ प्रभाव/ अनुप्रयोग/ साहित्य के सामाजिक संदर्भों एवं जीवन-मूल्य संबंधी प्रभावों आदि पर परियोजना कार्य दिए जाने चाहिए।
- शिक्षार्थी को उसकी रुचि के अनुसार विषय का चयन करने के छूट दी जानी चाहिए तथा अध्यापक/ अध्यापिका को मार्गदर्शक के रूप में उसकी सहायता करनी चाहिए।
- परियोजना – कार्य करने समय निम्नलिखित आधार को अपनाया जा सकता है-
    1. प्रमाण – पत्र
    2. आभार ज्ञापन
    3. विषय-सूची
    4. उद्देश्य
    5. समस्या का बयान
    6. परिकल्पना
    7. प्रक्रिया (साक्ष्य संग्रह, साक्ष्य का विश्लेषण)
    8. प्रस्तुतीकरण (विषय का विस्तार)
    9. अध्ययन का परिणाम
    10. अध्ययन की सीमाएँ
    11. स्त्रोत
    12. अध्यापक टिप्पणी
- परियोजना – कार्य में शोध के दौरान सम्मिलित किए गए चित्रों और संदर्भों के विषय में उचित जानकारी दी जानी चाहिए। उनके स्त्रोत को अवश्य अंकित करना चाहिए।
- चित्र, रेखाचित्र, विज्ञापन, ग्राफ, विषय से संबंधित आँकड़े, विषय से संबंधित समाचार की कतरनें एकत्रित के जानी चाहिए।
- प्रमाणस्वरूप सम्मिलित किए गए आँकड़े, चित्र, विज्ञापन आदि के स्त्रोत अंकित करने के साथ-साथ समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के नाम एवं दिनांक भी लिखने चाहिए।
- साहित्यकोश, संदर्भ-ग्रंथ, शब्दकोश की मदद लेनी चाहिए।
- परियोजना-कार्य में शिक्षार्थियों के लिए अनेक संभावनाएँ हैं । उनके व्यक्तिगत विचार तथा उनकी कल्पना के विस्तृत संसार को अवश्य सम्मिलित किया जाए।

परियोजना – कार्य के कुछ विषय सुझावात्मक रूप में दिए जा रहे हैं।

भाषा और साहित्य से जुड़े विविध विषयों/ विधाओं/ साहित्यकारों/ समकालीन लेखन के आधार पर

- हिंदी कविता में प्रकृति चित्रण (पाठ – जयशंकर प्रसाद) विभिन्न कवियों की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन, भाषा शैली, विशेषताएँ, वर्तमान के साथ प्रासंगिकता इत्यादि।

- भारतीय ग्रामीण का जीवन (पाठ – सूरदास की झोपड़ी)
    - आज़ादी से पहले, बाद में तथा वर्तमान में स्थिति
    - सुधार की आवश्यकताएँ
    - आपकी भूमिका/ योगदान/ सुझाव

- संघर्षों की जूझता पहाड़ी जीवन (पाठ – आरोहण)
    - बदलते समय के साथ बदलता जीवन
    - विश्लेषणात्मक व तथ्यात्मक प्रस्तुति
    - भौगोलिक स्थितियाँ, आपदाएँ
    - कारण और निवारण
    - आपकी भूमिका

- समकालीन विषय
    - कोविड -19 और हम
    - भूमिका – क्या है, क्यों है आदि का विवरण
    - विभिन्न देशों में प्रभाव
    - भारत के साथ तुलनात्मक अध्ययन
    - कारण और निवारण
    - आपकी भूमिका/ योगदान/ सुझाव

उपर्युक्त विषय सुझाव के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। आप दिशानिर्देशों के आधार पर अन्य विषयों का चयन कर सकते है।

परियोजना की शब्दसीमा लगभग 2000 शब्दों की होनी चाहिये।

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा –11वीं (2021-22)

परीक्षा भार विभाजन				
		विषयवस्तु	**उपभार**	**कुलभार**
1	**अपठित गद्यांश (चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर बहुविकल्पात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे)**		**15**	
	अ	दो अपठित गद्यांशों में से कोई एक गद्यांश करना होगा। (450-500 शब्दों के) (1 अंक x 10 प्रश्न)	10	**10**
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश करना होगा। (250-250 शब्दों के) (1 अंक x 5 प्रश्न)	05	**05**
2	**कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन ('अभिव्यक्ति और माध्यम' पुस्तक के आधार पर)**		**05**	
	अ	शब्दकोश से संबंधित 5 बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)	05	**05**
3	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 1 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**15**	
	अ	पठित काव्यांश पर पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05	
	ब	पठित गद्यांश पर पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न। (1 अंक x 05 प्रश्न)	05	
	स	पठित पाठों पर पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न। (1 अंक x 05 प्रश्न)	05	
4	**अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-1 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**05**	
	अ	पठित पाठों पर पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न। (1 अंक x 05 प्रश्न)	05	
5	**आंतरिक मूल्याङ्कन**			**10**
		श्रवण तथा वाचन	10	
कुल अंक				**50**

सत्र-1 2021-22 में निम्नलिखित पाठ सम्मिलित किए गए हैं –

पाठ्यपुस्तक - आरोह भाग – 1

गद्य खंड	**काव्य खंड**
प्रेमचंद - नमक का दारोगा	कबीर - (i) हम तौ एक एक करि जांनां। (ii) संतों देखत जग बौराना।
कृष्णा सोबती - मियाँ नसीरुद्दीन	मीरा - (i) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई (ii) पग घुंघरू बांधी मीरां नाची
शेखर जोशी - गलता लोहा	सुमित्रानंदन पंत - वे आँखें

अभिव्यक्ति और माध्यम	**अनुपूरक पाठ्यपुस्तक - वितान भाग – 1**
शब्दकोश, संदर्भ ग्रंथों की उपयोगी विधि और परिचय	कुमार गंधर्व - भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर

परीक्षा भार विभाजन द्वितीय सत्र				
		विषयवस्तु	**उप भार**	**कुलभार**
1	**कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन**			**20**
	1	दी गई स्थिति / घटना के आधार पर रचनात्मक लेखन (विकल्प सहित) (निबंधात्मक प्रश्न) (5 अंक x 1 प्रश्न)	05	
	2	औपचारिक/अनौपचारिक पत्र (निबंधात्मक प्रश्न) (5 अंक x 1 प्रश्न)	05	
	3	व्यावहारिक लेखन (प्रतिवेदन, प्रेस-विज्ञप्ति, परिपत्र, कार्यसूची/कार्यवृत्त से संबंधित दो लघु उत्तरीय प्रश्न - एक तीन व एक दो अंक का) (विकल्प सहित) (3 अंक x 1 प्रश्न) + (2 अंक x 1 प्रश्न)	05	
	4	जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता के विविध आयामों पर से संबंधित दो लघु उत्तरीय प्रश्न-एक तीन व एक दो अंक का) (विकल्प सहित) (3 अंक x 1 प्रश्न) + (2 अंक x 1 प्रश्न)	05	
2	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2** तथा **अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2**			**20**
	1	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 50-60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6	
	2	गद्य खंड पर आधारित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर (लगभग 50-60 शब्दों में) (3 अंक x 3 प्रश्न)	9	
	3	अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के पठित पाठों पर तीन अंक का एक तथा दो अंक का एक प्रश्न पूछा जाएगा (विकल्प सहित) (1 X 3)+(1 X 2)	5	
3		**आंतरिक मूल्याङ्कन**		**10**
	परियोजना कार्य		10	
कुल अंक				**50**

सत्र-2 2021-22 में निम्नलिखित पाठ सम्मिलित किए गए हैं –

पाठ्यपुस्तक - आरोह भाग – 1

काव्य खंड	**गद्य खंड**
भवानी प्रसाद मिश्र - घर की याद	कृष्णनाथ - स्पीति में बारिश
दुष्यंत कुमार - ग़ज़ल	कृश्नचंदर - जामुन का पेड़
निर्मला पुतुल - आओ, मिलकर बचाएँ	जवाहरलाल नेहरू - भारत माता

अभिव्यक्ति और माध्यम

1. कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया
2. स्ववृत्त लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र
3. जनसंचार माध्यम
4. पत्रकारिता के विविध आयाम

अनुपूरक पाठ्यपुस्तक - वितान भाग – 1

1. अनुपम मिश्र - राजस्थान की रजत बूँदें
2. बेबी हालदार - आलो - आँधारि

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. **आरोह, भाग-1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान भाग–1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

अभिव्यक्ति और माध्यम

1. कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण
2. कैसे बनता है रेडियो नाटक
3. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन
4. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया
5. विशेष लेखन - स्वरुप और प्रकार

अनुपूरक पाठ्यपुस्तक - वितान भाग – 2

1. ओम थानवी - अतीत में दबे पाँव
2. ऐन फ्रेंक - डायरी के पन्ने

निर्धारित पुस्तकें:

1. **आरोह, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **वितान, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण